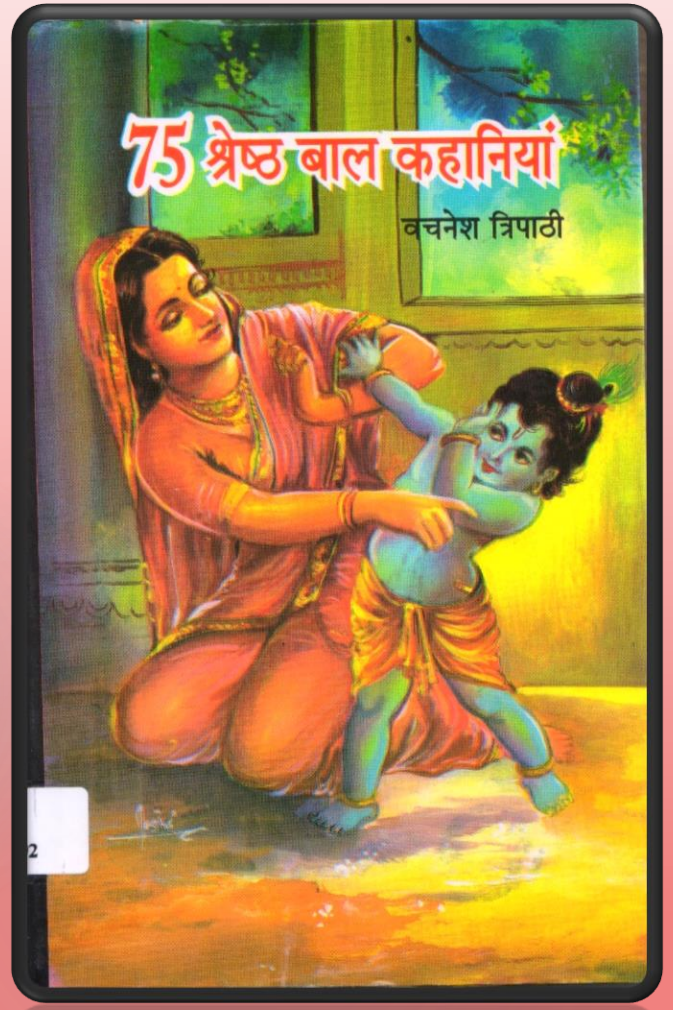

HB2892 – 75 श्रेष्ठ बाल कहानियां

वचनेश त्रिपाठी : हिंदी के वरिष्ठ पत्रकार और लेखक हैं। उन्होंने अपनी नवीनतम कृति '75 श्रेष्ठ बाल कहानियां' में दया, क्षमा, प्रेम, निष्कपटता, स्वावलंबन, देशभक्ति आदि गुणों से अनुस्यूत नानाविध पौराणिक आख्यानों, घटना-प्रसंगों, दृष्टांतों आदि को सरल भाषा तथा सहज शैली में निबद्ध किया हैं।

बच्चों के लिए लिखी गई यह कृति इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकी सद्गुणों के बीज-वपन का सर्वाधिक अनुकूल समय बचपन हैं।

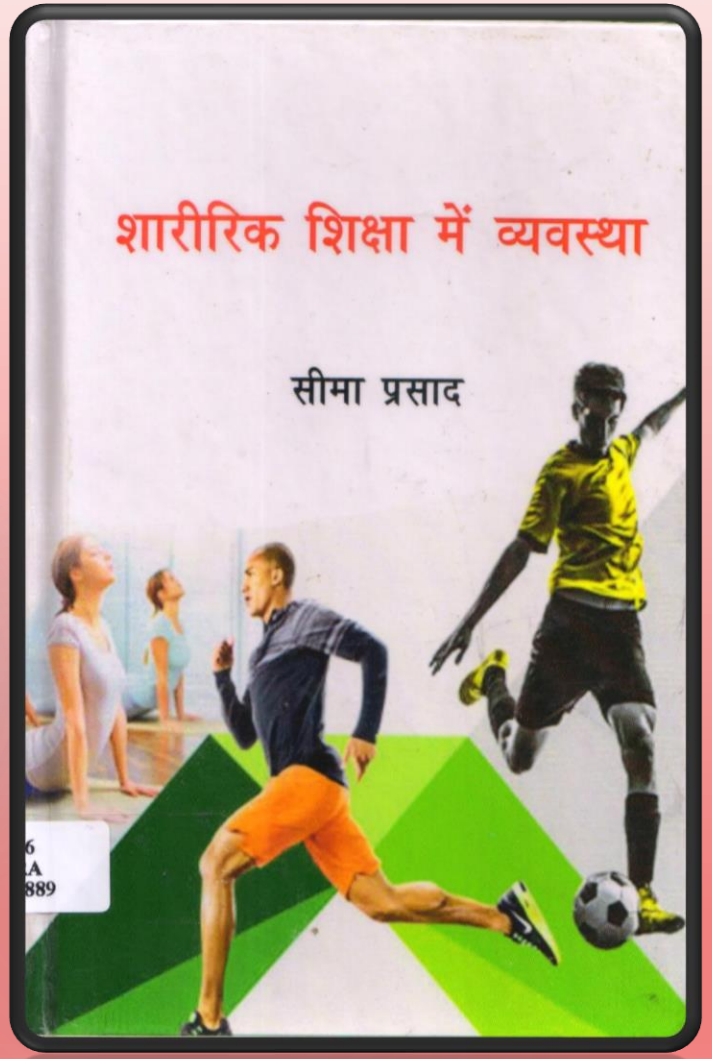

HB2889 - शारीरिक शिक्षा में व्यवस्था

सीमा प्रसाद

इस पुस्तक में शारीरिक शिक्षा का महत्व दर्शाया गया हैं। भारत में प्राचीन काल से शारीरिक शिक्षा का महत्व रहा हैं, परन्तु तब तक यह शिक्षा केवल गुरुकुल तक ही सिमित थी। स्वाधीनता के बाद इसे विद्यालयीन शिक्षा पाठ्यक्रम के साथ जोर दिया गया। इसी दृष्टि से प्रस्तुत पुरस्तक में शारीरिक शिक्षा के अंतर्गत आने वाली उन क्रियाकलापों के बारे में वर्णन हैं जो विद्यार्थियों को शारीरिक विकास में सहायता देती हैं।

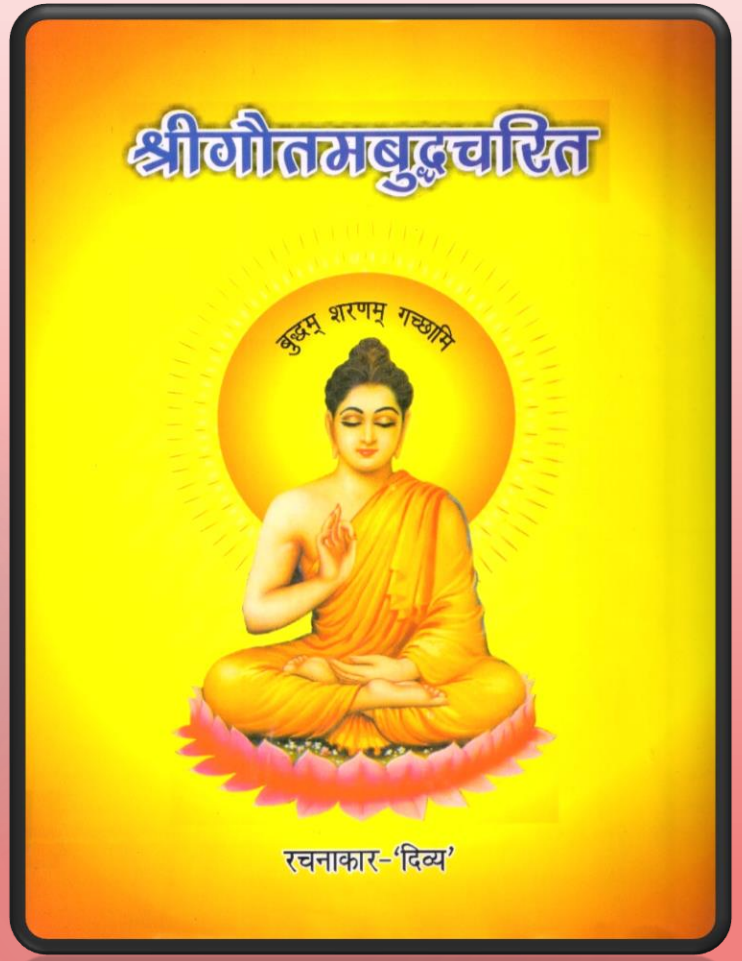

HB2890 - श्रीगौतमबुद्धचरित

खुशीराम द्विवेदी 'दिव्य' : श्रीगौतमबुद्धचरित गौतम बुद्ध की जीवनी अवधी भाषा में रचित एक ग्रन्थ काव्य हैं।

श्रीगौतमबुद्धचरित ग्रन्थ में गौतम बुद्ध के जीवन, उनकी शिक्षाओं को काव्यात्मक तरीके से दर्शाया गया है। इसमें शास्त्रियाँ सिद्धांतों का परिपालन हैं। इसकी रचना शैली रामचरितमानस की रचना शैली से अनुप्राणित प्रतीत होती हैं।

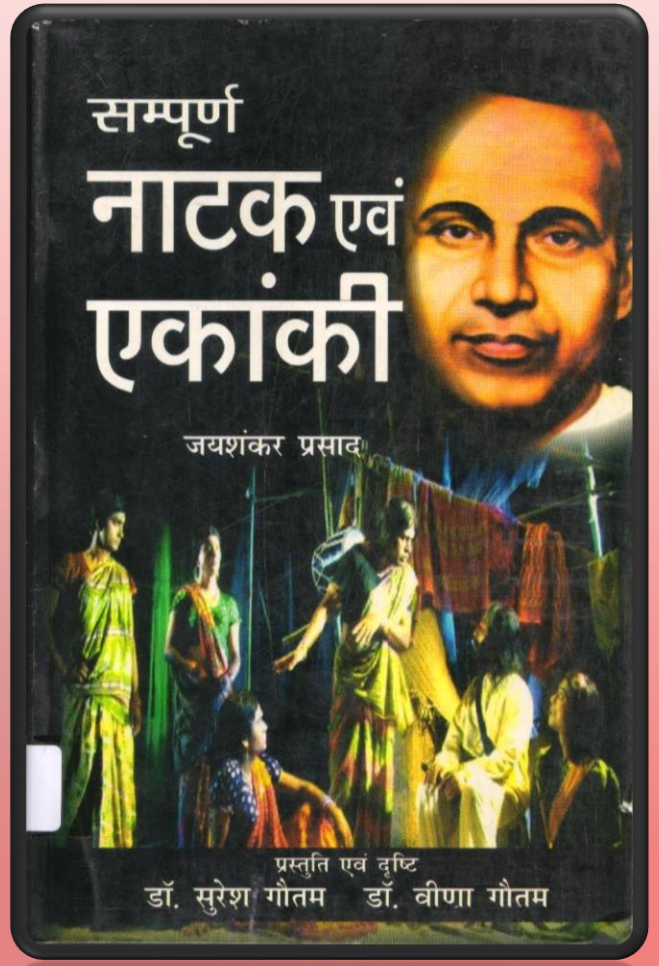

HB2894 & HB2895 - सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी भाग-1 एवं 2

जयशंकर प्रसाद : जयशंकर हिंदी कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार तथा निबन्ध-लेखक हैं। वे हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। उन्होंने हिन्दी काव्य में एक तरह से छायावाद की स्थापना की जिसके द्वारा खड़ीबोली के काव्य में न केवल कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई, बल्कि जीवन के सूक्ष्म एवं व्यापक आयामों के चित्रण की शक्ति भी संचित हुई और कामायनी तक पहुँचकर वह काव्य प्रेरक शक्तिकाव्य के रूप में भी प्रतिष्ठित हो गया। इसके फलस्वरूप ही 'खड़ीबोली' हिन्दी काव्य की निर्विवाद सिद्ध भाषा बन गयी।

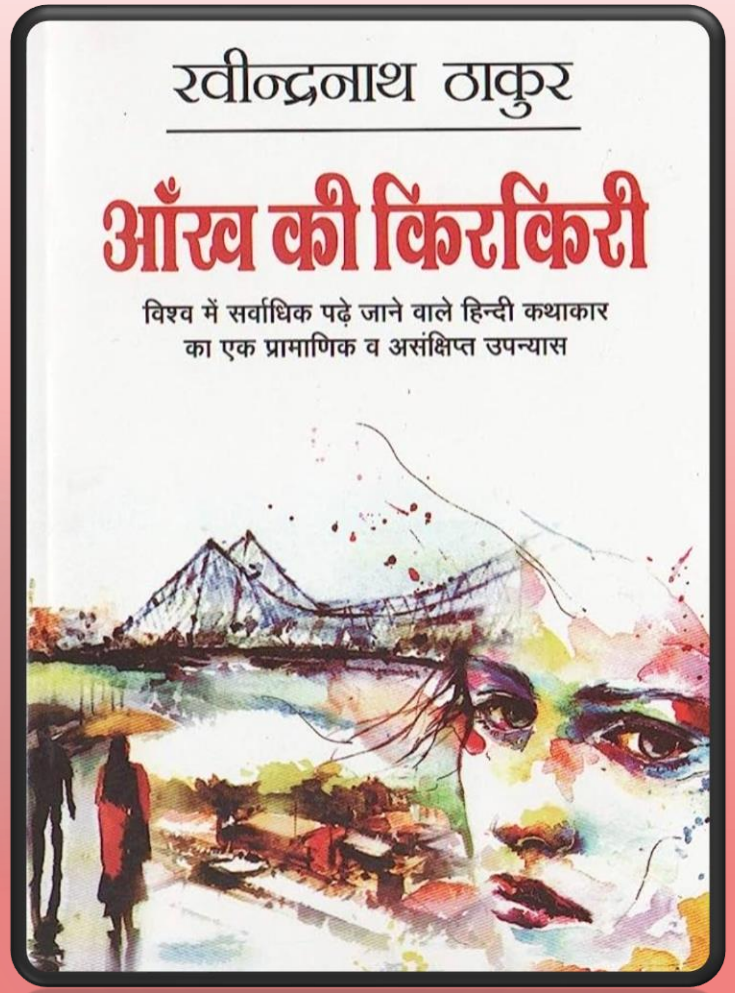

HB2893- आँख की किरकिरी

रवीन्द्रनाथ ठाकुर :

रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म 7 मई 1861 को कोलकता के ठाकुर बाड़ी में हुआ। बचपन से ही उनकी कविता, छन्द और भाषा में विशेष रूचि थी । पहली कविता उंन्होने आठ वर्ष की आयु में लिखी और प्रकाशित की । टैगोर ने अपने जीवन काल में कई, उपन्यास, निबंध, लघु कथाएं नाटक और गाने भी लिखे हैं ।

आँख की किरकिरी उपन्यास बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास विषवृक्ष से प्रेरित है। इसमें एक स्त्री के जीवन को लेकर कहानी बुनी गयी है और तत्कालीन बंगाल समाज की व्यस्था दर्शाई गयी हैं , यह उपन्यास 110 साल बाद भी पठनीय है और बंगाल में साहित्य - पठन - पाठन की अभी रूचि का भी आभास कराता हैं